



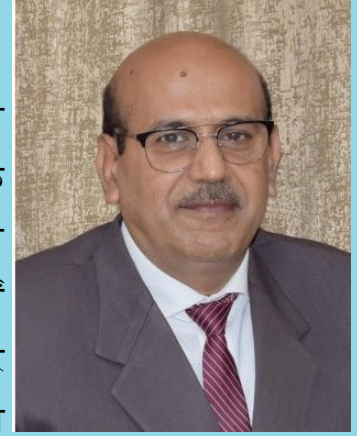
आभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 10, जनवरी - 2022

मार्गदर्शक श्याम सुंदर गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक	मुख्य संपादक लोकेश विश्नीई, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी	उप संपादक मनोज कुमार साहू, वरिष्ठ अनुवादक
--	--	--	--

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड का संदेश

“ रेलवे के सभी नेतृत्वकर्ताओं से मेरा अनुरोध है कि भारतीय रेलवे के सभी संसाधनों का उपयोग गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए किया जाए और सुरक्षा एवं आय के क्षेत्र में चौतरफा सुधार लाने तथा खर्च को कम करने के लिए सभी बुनियादी निर्देशों का पालन किया जाए। किसी अवांछनीय व्यय की अनुमति बिल्कुल भी न दी जाए। कार्यों की गुणवत्ता उच्चतम होनी चाहिए। निम्न गुणवत्ता वाले कार्यों के लिए जिम्मेदार लोगों पर सख्त कार्रवाई की जाए। ईमानदारी, दक्षता, गुणवत्तायुक्त परिणाम देने वाले कठोर परिश्रम, पेशे एवं वित्त संबंधी सत्यनिष्ठा उच्चतम दर्जे की होनी चाहिए।



ऐसे नियम या व्यवहार जो अनावश्यक रूप से हमारे लक्ष्य में बाधा डाल रहे हों, उन्हें भी उजागर किये जाने चाहिए और भारतीय रेलवे में सुधार लाने के लिए यदि आवश्यक हो तो उन नियमों को बदल दिया जाना चाहिए। इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में सभी को एकाग्रचित्त रहना चाहिए। हमारा प्रत्येक कार्य केवल इसी भावना से किया जाना चाहिए।

ईमानदारी, दक्षता, उपलब्ध संसाधनों से उच्चतम गुणवत्ता वाले उत्पादन, पेशे और वित्त संबंधी सत्यनिष्ठा हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए जिससे हम भारतीय रेल को

विश्व के सर्वश्रेष्ठ संगठनों में से एक बना सकें।

मैं जानता हूँ कि हम सभी इसमें सक्षम हैं और निश्चित रूप से इसे प्राप्त करेंगे।

यह संदेश अपने अधीनस्थ सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को भी अवश्य दी जाए।”

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं

1. असमिया	2. उड़िया	3. उर्दू	4. कन्नड़	5. कश्मीरी
6. गुजराती	7. तमिल	8. तेलुगू	9. पंजाबी	10. बंगला
11. मराठी	12. मलयालम	13. संस्कृत	14. सिन्धी	15. हिंदी
16. नेपाली	17. कोंकणी	18. मणिपुरी	19. मैथिली	20. डोगरी
21. संथाली	22. बोडो			

73 वां गणतंत्र दिवस समारोह संपन्न

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल में कोविड नियमों का पूरी तरह से पालन करते हुए 73वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सेकरसा मैदान, डब्ल्यू. आर. एस. कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता द्वारा मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री संजय कुमार गुप्ता की अगुवाई में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। तदुपरांत उन्होंने रेल सुरक्षा बल के जवानों, सिविल डिफेंस के वालंटियरों द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली।



इसके पश्चात मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने अपने संबोधन में उपस्थित जनसमूह को 73वें



गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रायपुर मंडल का भारतीय रेलवे में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी स्थापना के बाद से ही इस मंडल ने हर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह मंडल लदान, विद्युतीकरण, लाइन दोहरीकरण, यात्री सुविधा, स्वच्छता, इन्फ्रास्ट्रक्चर संबंधी कार्य, यात्रियों की सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार, कर्मचारी कल्याण संबंधी कार्य एवं यात्री परिवहन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कार्य करता रहा है। गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ मंडल कार्मिक

अधिकारी श्री उदय कुमार भारती द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अंत में मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता एवं अध्यक्ष, सेक्रो श्रीमती राधा गुप्ता द्वारा अनेकता में एकता के प्रतीक रंग-बिरंगे गुब्बारे एवं शांति के प्रतीक श्वेत कबूतर आकाश में छोड़े गए।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्वाई एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रास्ट्रक्चर) श्री आशीष मिश्रा सहित सेक्रो के पदाधिकारीगण, मंडल के अधिकारीगण, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर के विभिन्न यूनियनों के प्रतिनिधिगण, मीडिया के सदस्य, रेल कर्मचारी एवं उनके परिजन उपस्थित थे।



नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती मनाई गई

दिनांक 24.01.2022 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के प्रांगण में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्वाई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.) श्री आशीष मिश्रा एवं अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा उनके छायाचित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये।



इसके पश्चात मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी के योगदान को राष्ट्र कभी नहीं भूला

सकता। सभी भलीभांति जानते हैं कि उन्होंने आज़ाद हिंद फौज का गठन कर किस प्रकार आज़ादी की लड़ाई को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने हमें नेताजी की प्रखर मेधा शक्ति, दूरदर्शिता एवं अद्भुत लेखन क्षमता से भी अवगत कराया।

“ आजादी का अमृत महोत्सव ” के अंतर्गत राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर बालिकाओं का सम्मान

बालिकाओं के सशक्तिकरण तथा प्रत्येक क्षेत्र में उनके लिए समानता की पृष्ठभूमि तैयार कर उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु प्रत्येक वर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय बालिका दिवस के इस अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल में स्काउट गाइड के 06 एवं रेलवे स्कूल के 05 बालिकाओं को उनके उत्कृष्ट कार्य और विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया।



मंडल रेल प्रबंधक श्री श्याम सुंदर गुप्ता की अध्यक्षता में उक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक ने अपने संबोधन में समाज और

परिवार में बालिकाओं की भूमिका को अहम बताते हुए परिवार के अभिभावकों द्वारा बालक और बालिका के प्रति समान दृष्टिकोण रखे जाने का संदेश दिया। इस अवसर पर समाज सेविका शुभांगी आपटे विशेष रूप से उपस्थित थीं। उन्होंने प्लास्टिक रहित पर्यावरण के संबंध में अपने योगदान को बताया एवं बालिकाओं को मास्क, कपड़े की थैली भेट की। उक्त अवसर पर अन्य अधिकारियों के साथ स्कूल के शिक्षक भी उपस्थित थे। कोविड 19 के नियमों का अनुपालन करते हुए कार्यक्रम को मूर्त रूप दिया गया।

सेक्रो, रायपुर द्वारा हर्षोल्लास के साथ गणतंत्र दिवस मनाया गया

73वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन, रायपुर मंडल द्वारा संचालित टाइनी टॉट स्कूल, डब्ल्यू.आर.एस. कॉलोनी, रायपुर में अध्यक्षा, सेक्रो, श्रीमती राधा गुप्ता द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर सेक्रो, अध्यक्षा द्वारा मंडल चिकित्सालय, रायपुर एवं रेलवे चिकित्सालय, बी.एम.वाय. में मरीजों को स्टीम वेपोरेजर वितरित किये गये। साथ ही उनके द्वारा मंडल चिकित्सालय, रायपुर को मेडिसिन ट्रॉली भी भेंट की गयी।



इस अवसर पर उपाध्यक्षा श्रीमती शिखा विश्वोई, उपाध्यक्षा श्रीमती सुनीता मिश्रा, सचिव श्रीमती पूनम साहू, कोषाध्यक्ष श्रीमती संचिता बेनर्जी, सह सचिव श्रीमती शिवानी गुप्ता एवं सेक्रो सदस्याओं की भी सक्रिय सहभागिता रही।

रायपुर स्टेशन में फुट ओवर ब्रिज गर्डर की लांचिंग

रायपुर स्टेशन पर रेल यात्रियों की सुविधा के लिए नए फुट ओवर ब्रिज का निर्माण कार्य प्रगति पर है। स्टेशन में स्थित मल्टी फंक्शनल काम्प्लेक्स के पास प्लेटफार्म नं 4, 2 एवं 3, 5 एवं 6 व प्लेटफार्म नं 7 को पार करने हेतु 6 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज के गर्डर की लांचिंग का कार्य दिनांक 15 दिसंबर 2021 से प्रारंभ होकर 17 दिसंबर 2021 को पूर्ण हुआ। लांचिंग के बाद सिविल कार्य प्रगति पर है। स्टेशन के लगभग मध्य में बनने वाली यह फुट ओवर ब्रिज रेल यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण सुविधा होगी। इससे अन्य फुट ओवर ब्रिज पर यात्री दबाव को कम करने में काफी सहायता प्राप्त होगी।



- सुनील कुमार
मंडल इंजीनियर (स्पेशल)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

140 टन ब्रेक डाउन क्रेन दुर्घटना राहत में निभा रहा अहम भूमिका

भारतीय रेलवे की कार्य प्रणाली, परिचालन एवं रेल लाइन की अधोसंरचना को ध्यान में रखते हुए 140 टन क्रेन का डिजाइन किया गया है। इसकी गति क्षमता 100 किलोमीटर/घंटा हैं, जो अपने पूरे साजो सामान के साथ किसी भी दुर्घटना से निपटने हेतु हरदम तैयार रहता है। यह अपनी पूरी क्षमता पर 140 टन का भार एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखने में पूर्णतः सक्षम है। इसे डीजल लोको, विद्युत लोको, पूरी तरह से लोडेड माल डिब्बा एवं सवारी डिब्बा को ध्यान में रखते हुये बनाया गया है। इसकी कार्य प्रणाली में काउन्टर वेट एवं प्राप



बेस की दूरी का अहम योगदान है, जिससे उठाने वाले लोड को ध्यान में रखते हुए क्रेन को तैयार किया जाता है। तैयारी का समय एवं प्राप बेस की स्थिरता का काम की सुरक्षा एवं संरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस नाजुक प्रणाली को स्वचालिकता प्रदान करने के लिए कम्प्यूटर आधारित सेफ लोड इंडीकेटर, लिमिट स्विच एवं ध्वनिसूचक प्रणाली की व्यवस्था की गई है। क्रेन चालक की सुविधा के लिये उठाए गए लोड की मात्रा की जानकारी एवं उसके संचालन के लिये क्रेन चालक के कैब में क्लोज सर्किट कैमरा भी लगा हुआ है, जो जमालपुर एवं अन्य संबंधित संस्थानों से जुड़ा रहता है।

भिलाई में ब्रेक डाउन का भाप इंजन से चलने वाले क्रेन के समय से गौरवशाली इतिहास रहा है। इस आधुनिकता के दौर को देखते हुये डीजल हाइड्रोलिक ब्रेक डाउन क्रेन को ए. आर. टी. के संयोजन में शामिल किया गया और डीजल हाइड्रोलिक कार्य प्रणाली से नये युग का आगाज हुआ। इस 140 टन क्रेन के रख रखाव व त्रुटिरहित परिचालन का कार्य दक्ष रेल कर्मियों द्वारा किया जाता है।

140 टन हाइड्रोलिक ब्रेक डाउन क्रेन के दुर्घटना राहत ट्रेन में शामिल होने के बाद से राहत, मरम्मत व रेस्टोरेशन के कार्य में सार्थक तेजी आई है। इससे बड़ी ट्रेन दुर्घटना में जल्द से जल्द घटना स्थल पर पहुंचने से मरम्मत के कार्य में गतिशीलता आती है।

पिछले 27 वर्षों से अनवरत सेवा दे रहे इस क्रेन ने अपनी निर्धारित सीमा दाधापारा से डोंगरगढ़ और लखौली के मध्य एवं पड़ोसी मंडलो में विपरीत परिस्थितियों में दुर्घटना राहत में अभूतपूर्व कार्य किया है। दुर्घटना राहत के अलावा इस क्रेन का उपयोग जनकल्याणकारी सुविधाओं के निर्माण कार्य में भी आवश्यकतानुसार किया जाता है।

- एस. साई रमेश

सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, भिलाई

90 साल की जसवंती बेन को पद्मश्री

लिज्जत पापड़ की फाउंडर है जसवंती बेन

मुंबई की जसवंती बेन ने 1959 में 80 रुपये के उधार के साथ पापड़ बनाना प्रारम्भ किया....

अगले साल उन्होंने एक खाट और चूल्हा खरीदा, पापड़ सुखाने और पैक करने के लिए.....

आज उनका टर्नओवर 810 करोड़ रुपये है। वह लगभग 45,500 महिलाओं को रोजगार देती है..... वे 4 अरब पापड़ बनाती हैं।

मुंबई की रहने वाली जसवंती जमनादास पोपट ने अपना परिवार चलाने के लिए 1959 में पापड़ बेलने का काम शुरू किया था। जसवंती बेन गरीब परिवार से ताल्लुक रखती थी और कम पढ़ी-लिखी भी थी लेकिन उनमें कारोबार की अच्छी समझ थी। उन्होंने इस काम में अपने साथ और 6 गरीब बेरोजगार महिलाओं को जोड़ा और 80

रुपये का कर्ज लिया और पापड़ बेलने का काम शुरू किया। इन महिलाओं द्वारा 15 मार्च 1959 को लिज्जत पापड़ का व्यवसाय शुरू किया था। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि यह बिजनेस सारे भारत की पहचान के तौर पर पूरी दुनिया में अपनी जगह बना लेगा।

80 रुपए उधारी से 800 करोड़ का टर्नओवर

गरीबी के कारण उन्होंने 80 रुपए उधार लेकर व्यवसाय शुरू किया था लेकिन कुछ महीने की मेहनत से ही उन्होंने 80 रुपए चुका दिए और फिर चार पैकेट से 40 और फिर 400 तक पहुंचने में वक्त नहीं लगा। 80 रुपये से शुरू हुआ यह कारोबार आज सालाना 800 करोड़ रुपये का कारोबार करती है। इस कारोबार से तकरीबन 45 हजार महिलाएं जुड़ी हुई हैं और इसके 62 ब्रांच हैं।

कमजोरी को बनाया ताकत

जितनी भी महिलाएं इस व्यवसाय से जुड़ी हैं वह आर्थिक रूप से कमजोर हैं और अपनी खराब आर्थिक स्थिति के कारण ज्यादा शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई है लेकिन वे इसे अपनी कमी नहीं मानती और यही इस कारोबार की सफलता का राज है।

पापड़ का नामकरण

1962 में ग्रुप ने अपने पापड़ का नामकरण किया और यह नाम था 'लिज्जत पापड़'। लिज्जत गुजराती शब्द है, जिसका अर्थ स्वादिष्ट होता है। साथ ही, इस ऑर्गेनाइजेशन का नाम रखा गया 'श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़'।

मशीन नहीं हाथों से बनाया जाते हैं पापड़

महिलाओं से शुरू और उन्हीं के लिए : लिज्जत पापड़ की कॉ-फाउंडर जसवंती बेन पोपट चाहती तो आज लिज्जत पापड़ के बिजनेस को बहुत आगे ले जा सकती थीं लेकिन जसवंतीबेन उन महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती थी, जिनके बच्चे पढ़ नहीं पा रहे थे और जिसके घर में कोई कमाने वाला नहीं हो। जसवंती बेन का यही मुख्य उद्देश्य था की इन महिलाओं को रोजगार मिले और ये अपना घर चला सकें।



संकलनकर्ता - लोकेश विशनोई

अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

बाबाजी का भोग

मुंशी प्रेमचंद

रामधन अहीर के द्वार एक साधू आकर बोला- बच्चा तेरा कल्याण हो, कुछ साधू पर श्रद्धा करा। रामधन ने जाकर स्त्री से कहा- साधू द्वार पर आए हैं, उन्हें कुछ दे दे।

स्त्री बरतन माँज रही थी और इस घोर चिंता में मग्न थी कि आज भोजन क्या बनेगा, घर में अनाज का एक दाना भी न था। चैत का महीना था, किन्तु यहाँ दोपहर ही को अंधकार छा गया था। उपज सारी की सारी खलिहान से उठ गई। आधी महाजन ने ले ली, आधी जमींदार के प्यादों ने वसूल की, भूसा बेचा तो व्यापारी से गला छूटा, बस थोड़ी-सी गाँठ अपने हिस्से में आई। उसी को पीट-पीटकर एक मन भर दाना निकला था। किसी तरह चैत का महीना पार हुआ। अब आगे क्या होगा। क्या बैल खाएँगे, क्या घर के प्राणी खाएँगे, यह ईश्वर ही जाने। पर द्वार पर साधू आ गया है, उसे निराश कैसे लौटाएँ, अपने दिल में क्या कहेगा।



स्त्री ने कहा- क्या दे दूँ, कुछ तो रहा नहीं। रामधन- जा, देख तो मटके में, कुछ आटा-वाटा मिल जाए तो ले आ।

स्त्री ने कहा- मटके झाड़ पोंछकर तो कल ही चूल्हा जला था, क्या उसमें बरकत होगी? रामधन- तो मुझसे तो यह न कहा जाएगा कि बाबा घर में कुछ नहीं है किसी और के घर से माँग ला। स्त्री – जिससे लिया उसे देने की नौबत नहीं आई, अब और किस मुँह से माँगू? रामधन- देवताओं के लिए कुछ अगोवा निकाला है न वही ला, दे आऊँ।

स्त्री- देवताओं की पूजा कहाँ से होगी?

रामधन- देवता माँगने तो नहीं आते? समाई होगी करना, न समाई हो न करना। स्त्री- अरे तो कुछ अँगोवा भी पँसरी दो पँसरी है? बहुत होगा तो आध सेरा। इसके बाद क्या फिर कोई साधू न आएगा। उसे तो जवाब देना ही पड़ेगा। रामधन- यह बला तो टलेगी फिर देखी जाएगी। स्त्री झुँझला कर उठी और एक छोटी-सी हाँडी उठा लाई, जिसमें मुश्किल से आध सेरा आटा था। वह गेहूँ का आटा बड़े यत्न से देवताओं के लिए रखा हुआ था। रामधन कुछ देर खड़ा सोचता रहा, तब आटा एक कटोरे में रखकर बाहर आया और साधू की झोली में डाल दिया।

महात्मा ने आटा लेकर कहा- बच्चा, अब तो साधू आज यहीं रमेंगे। कुछ थोड़ी-सी दाल दे तो साधू का भोग लग जाए। रामधन ने फिर आकर स्त्री से कहा। संयोग से दाल घर में थी। रामधन ने दाल, नमक, उपले जुटा दिए। फिर कुएँ से पानी खींच लाया। साधू ने बड़ी विधि से बाटियाँ बनाई, दाल पकाई और आलू झोली में से निकालकर भुरता बनाया। जब सब सामग्री तैयार हो गई तो रामधन से बोले बच्चा, भगवान के भोग के लिए कौड़ी भर घी चाहिए। रसोई पवित्र न होगी तो भोग कैसे लगेगा? रामधन- बाबाजी घी तो घर में न होगा। साधू- बच्चा भगवान का दिया तेरे पास बहुत है। ऐसी बातें न कह।

रामधन- महाराज, मेरे गाय-भैंस कुछ भी नहीं है।

‘जाकर मालकिन से कहो तो?’ रामधन ने जाकर स्त्री से कहा- घी माँगते हैं, माँगने को भीख, पर घी बिना कौर नहीं धंसता। स्त्री- तो इसी दाल में से थोड़ी लेकर बनिए के यहाँ से ला दो। जब सब किया है तो इतने के लिए उन्हें नाराज करते हो। घी आ गया। साधूजी ने ठाकुरजी की पिंडी निकाली, घंटी बजाई और भोग लगाने बैठे। खूब तनकर खाया, फिर पेट पर हाथ फेरते हुए द्वार पर लेट गए। थाली, बटली और कलछुली रामधन घर में माँजने के लिए उठा ले गया। उस दिन रामधन के घर चूल्हा नहीं जला। खाली दाल पकाकर ही पी ली। रामधन लेटा, तो सोच रहा था- मुझसे तो यही अच्छे !

माह के साहित्यकार जयशंकर प्रसाद

जन्म : 30 जनवरी 1889

निधन : 15 नवंबर 1937

जन्म स्थान : वाराणसी, उत्तर प्रदेश

प्रमुख कृतियाँ : चित्राधार, कामायनी, आँसू, लहर, झरना, एक घूँट, विशाख, अजातशत्रु, आकाशदीप, आँधी, ध्रुवस्वामिनी, तितली और कंकाल

विविध : ' कामायनी ' पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक



भारत महिमा

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक-हार
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योम-तुम पुँज हुआ तब नाश, अखिल संसृति हो उठी अशोक
विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत
बचाकर बीच रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत
अरुण-केतन लेकर निज हाथ, वरुण-पथ में हम बड़े अभीत
सुना है वह दधीचि का त्याग, हमारी जातीयता का विकास
पुरंदर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरा इतिहास
सिंधु-सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह
दे रही अभी दिखाई भग्न, मग्न रत्नाकर में वह राह
धर्म का ले लेकर जो नाम, हुआ करती बलि कर दी बंद
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम

यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं
जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर
चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान
जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष

- जयशंकर प्रसाद

मंडल की गतिविधियाँ संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार ।